Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

BA Part I (H)
Paper II

सामाजिक स्थितिकी तथा सामाजिक गत्यात्मकता (आगस्त कॉम्ट) :-

कॉम्ट ने समाजशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक विकास के सामान्य नियमों को खोजने का प्रयास किया। इसी सन्दर्भ में कॉम्ट ने सामाजिक स्थितिकी एवं सामाजिक गत्यात्मकता सम्बन्धी अपने विचार प्रस्तुत किये -

सामाजिक स्थितिकी :- कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत सामाजिक स्थिति की सम्बन्धी विचारों को सामाजिक व्यवस्था के सिद्धान्त के अन्तर्गत रखा जा सकता है। सामाजिक स्थिति से तात्पर्य किसी समाज के उस अस्तित्व या स्थिति से है जिसमें उसका किसी एक काल के सन्दर्भ में विश्लेषण किया जा सकता है। कॉम्ट के अनुसार, "समाजशास्त्र का स्थितिकीय अध्ययन, सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न अंगों की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है अथवा यह उन विशिष्ट कालों का अध्ययन है जो (सामाजिक व्यवस्था से सम्बन्धित) सामाजिक स्थिति के मूलभूत स्वरूप को प्रकट करते हैं।" कॉम्ट ने स्पष्ट किया कि समाजशास्त्र को सामाजिक व्यवस्था और प्रगति के उन नियमों की खोज करनी चाहिए जिनके द्वारा सामाजिक व्यवस्था बनी रहती है और समाज में प्रगति की दिशा में परिवर्तन होते हैं। सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन द्वारा ही

समाजशास्त्र के उन तत्वों को समझ सकते हैं जो समाज के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत सामाजिक स्थिति की का कॉम्ट ने दो प्रकार से अध्ययन करने का सुझाव दिया है, जो इस प्रकार है -

(1) मानवीय प्रकृति का अध्ययन - मनुष्य समाज के निर्माण के लिए सार्वभौमिक रूप से सहमत क्यों होता है? अथवा वह ऐसी क्रियाएं क्यों करता है जिनसे सार्वभौमिक मतैक्य का वातावरण बनता है! इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कॉम्ट का सुझाव है कि सर्वप्रथम सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत एक विशिष्ट काल से सम्बन्धित मानवीय प्रकृति का अध्ययन किया जाना चाहिए

(2) सामाजिक प्रकृति का अध्ययन => कॉम्ट के अनुसार धर्म, बौद्धिकता एवं भावना द्वारा मनुष्यों के बीच एकता को उत्पन्न करता है। सम्पत्ति और भाषा के बीच समरूपता स्थापित करते हुए कॉम्ट ने लिखा है, "सम्पत्ति को समाज की क्रियाओं के परिणाम के रूप में जाना जा सकता है एवं भाषा समाज की बौद्धिकता का परिणाम है। इस प्रकार कॉम्ट ने बतलाया कि पदार्थ (सम्पत्ति) एवं बौद्धिकता के संयोग से ही सभ्यता का उदय होता है जो सामाजिक प्रकृति का निर्धारण करती है।

सामाजिक स्थिति की एक ओर तो ~~अध्ययन करती~~ निश्चित काल में सामाजिक संरचना का अध्ययन करती है तथा दूसरी ओर उन तत्वों का अध्ययन करती है जो सा० मतैक्य के लिए उत्तरदायी होते हैं।

सामाजिक गत्यात्मकता :- सामाजिक गति विज्ञान मानव के विकास या प्रगति का अध्ययन है। यह मानवता की आवश्यक तथा निरन्तर गति का विज्ञान है। इसके अन्तर्गत वे निश्चित नियम आ जाते हैं जिनके अनुसार समाज का क्रमिक विकास या परिवर्तन होता है। कॉम्ट के अनुसार यह प्रमाणित करना सरल है कि समाज का क्रमिक परिवर्तन सदैव ही एक निश्चित क्रम से हुआ है, यह क्रम निरपेक्ष तो नहीं है फिर भी कुछ समानताओं तथा आवश्यक अनुक्रमों को तो ढूंढा ही जा सकता है। साथ ही सामाजिक स्थितियों के विकास में निरन्तरता होती ही है। सामाजिक गति विज्ञान इन्हीं सबका अध्ययन है।

कॉम्ट के अनुसार सामाजिक गति विज्ञान का मूल सिद्धान्त यह है कि वह वर्तमान सामाजिक स्थिति को इसके पहले की स्थिति के आवश्यक परिणाम के रूप में तथा आने वाली स्थिति को अपरिहार्य चालक के रूप में कल्पना है। इस दृष्टि से सामाजिक गति विज्ञान का उद्देश्य उन नियमों को खोजना है जो कि इस निरन्तरता को निर्देशित करते हैं और जो संयुक्त रूप से मानव विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। इस प्रकार इस विज्ञान का प्रमुख कार्य सामाजिक प्रगति के वास्तविक सिद्धान्त को प्रतिपादित करना है।